Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity
ISSN: 2279-0233

Continuous issue-25 | June – July 2016

सिन्धी भाषा का वर्तमान वैश्विक परिदृश्य

'क्या सिन्धी भाषा लुप्त हो जाएगी?', 'आजकल के बच्चे सिन्धी में बात ही नहीं करते', 'सिन्धी पढ़ने का आख़िर क्या फ़ायदा, 'सिन्धी भाषा बचाओ, सिन्धियत बचाओ; ये वाक्य हर सिन्धी साहित्यिक-सामाजिक संगोष्ठी, हर सिन्धी संस्था की मीटिंग, यहां तक कि हर सिन्धी मोहल्ले, गली, नुक्कड़ पर होने वाली बातचीत का हिस्सा हैं। सिन्धी भाषा की वर्तमान स्थिति, उसके घटते चलन पर विमर्श किया जाता है, उसके भविष्य पर चिंता जताई जाती है।

यह वास्तविकता है कि संसार के भाषाई नक़्शे से कई भाषाएं लुप्त हो गई हैं और कई लुप्त होने की प्रक्रिया से गुज़र रही हैं। भारत में भी अल्प समुदाय की भाषाओं के साथ-साथ राज्य भाषाओं को भी इस आपत्ति का सामना किसी न किसी संदर्भ में करना पड़ रहा है। परंतु ग़नीमत है कि 'लैंग्वेज शिफ़्ट, 'लैंग्वेज एसिमिलेशन, 'लेंग्वेज डेथ', 'एनडेंजरड लैंग्वेज, 'एक्सटिंक्ट लैंग्वेज' आदि के साथ-साथ 'लैंग्वजे रिवाइवल, 'रिवर्सिंग लैंग्वेज शिफ़्ट, 'लैंग्वेज रीवाइटलाइज़ेशन'जैसे विषयों पर भी विचार-विमर्श हो रहा है। कुछ समय पूर्व यह समाचार पढ़ा कि विश्व की एक प्राचीन भाषा 'बो'ख़त्म हो गई क्योंकि यह भाषा बोलने वाले आख़िरी व्यक्ति की मृत्यु हो गई, अर्थात् किसी भी भाषा का आख़िरी जानकार व्यक्ति जब तक जीवित है, तब तक वह भाषा 'जीवित'तो कही जा सकती है। ऐसी स्थिति में क्या सिन्धी भाषा के संदर्भ में यह चिंता और डर उचित है? इस स्थिति पर विचार करने से पूर्व सिन्धी भाषा के इतिहास और वर्तमान को जानना आवश्यक है। सिन्धी भाषा का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है।

1. सिन्धी भाषा

भारतीय-आर्य परिवार की प्राचीन भाषा सिन्धी, भारत के संविधान में आठवीं सूचि में दर्ज भारतीय भाषाओं में से एक है। सिन्धी भाषा का आधार प्राकृत और संस्कृत भाषा है और अरबी, फ़ारसी एवं द्राविड़ भाषाओं से भी इसने काफ़ी कुछ ग्रहण किया है। सिन्धी ने संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के कई ऐसे प्राचीन शब्द और व्याकरिणक रूप अपने पास सुरक्षित रखे हैं जो कई अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में नहीं मिलते। प्रो. जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार सिन्धी की मुख्य छह उपभाषाएं हैं:१

1. सिराइकी, जो सिन्ध के ऊपरी भाग (सिरो) में प्रचलित है
2. विचोली, जो केंद्रीय सिन्ध में बोली जाती है
3. लाड़ी, जो लाड़ अर्थात् सिन्ध के निचले हिस्से में प्रचलित है
4. लासी, जो सिन्ध के पश्चिम में बलूचिस्तान के लसबेलो इलाके में प्रचलित है
5. थरी या थरेली, जो सिन्ध के दक्षिण-पूर्वी इलाके थर में तथा भारत में राजस्थान के जैसलमेर इलाके में प्रचलित है

6. कच्छी, जो गुजरात के कच्छ और काठियावाड़ के एक हिस्से में बोली जाती है।

1947 से पूर्व सिन्धी भाषा का प्रमुख केंद्र सिन्ध (अब पाकिस्तान में) था। अखंड भारत के एक भाग के रूप में सिन्ध हमेशा हमलावरों का पहला निशाना रही इसलिए इसे अप्रवासियों के लिए उत्तर-पश्चिम का 'प्रवेशद्वार'भी कहा गया है। ग्रीक, अरब, अरग़ून, तरखान, सिंथियन, मुग़ल और अनेक शासकों का शासन सिन्ध पर रहा। हमलावरों की संस्कृतियों और भाषाओं का प्रभाव भी सिन्ध पर पड़ा। हिन्दी, पर्शियन, अंग्रेज़ी, अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं की कुछ विशेषताएं भी सिन्धी भाषा में समाहित हो गईं। भारतीय आर्य भाषाओं के परिवार की यह भाषा अपनी भाषावैज्ञानिक विशेषताओं की वजह से महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

1.1 सिन्धी भाषा की लिपियां

सन् ७१२ में अरबों के सिन्ध फ़तह करने के तीन सौ वर्ष बाद भी, मुहम्मद ग़ज़नी के समय में, इतिहासकार अल-बरूनी ने सिन्ध में प्रचलित तीन लिपियों की बात कही है - अर्धनागरी, सैंधुव और मालवारी।[२] दसवीं शताब्दी के इतिहासकार इब्न-हाकल की पुस्तक 'सूरत-अल-अरद'के अनुसार सिन्ध में अरबी और सिन्धी भाषाएं बोली जाती हैं परंतु इस बात की जानकारी नहीं है कि ये किस लिपि में लिखी जाती हैं। सिन्धी उन भाषाओं में से है जो एक से अधिक लिपियों में लिखी जाती रही है। यूनिवर्सिटी ऑफ़ इलिनाइ की सिन्धी भाषा वेबसाइट के अनुसार एक समय पर सिन्धी आठ लिपियों में लिखी जाती थी, ये लिपियां थीं - ठट्टई, खुदाबादी, लुहाणकी, मेमणकी, खोजकी, देवनागरी, गुरमुखी, हटकाई या हटवाणिकी। एक रोचक तथ्य यह भी है कि ब्रिटिष जब सिन्ध में आए, तब सिन्धी लिखने के लिए पंडित देवनागरी का प्रयोग करते थे; व्यापारी, खोजा, मेमण 'मोदी'या 'वाणिका'(बिना स्वर चिह्नों की) में लिखते थे; हिन्दू स्त्रियां गुरमुखी में लिखती थीं; और सरकारी कर्मचारी अरबी लिपि में सिन्धी लिखते थे।

रिचर्ड बर्टन के अनुसार, 'सिन्धी भाषा कई लिपियों में लिखी जाती है, वर्णमाला के मुस्लिम तरीकों के अलावा, इसकी कम से कम आठ विभिन्न वर्णमालाएं हैं।'[३] जार्ज स्टैक ने तो सिन्धी ग्रामर की पुस्तक में सिन्धी की चौदह लिपियां बताई हैं।

अंग्रेज़ों ने १८४३ में सिन्ध पर कब्ज़ा किया। अंग्रेज़ सरकार द्वारा गठित एक कमेटी ने सिन्धी की प्रचलित लिपियों में से अरबी-सिन्धी लिपि को सिन्धी लिखने के लिए मुनासिब माना और प्रचलित वर्णमालाओं का आधार लेकर, १८५३ में बावन अक्षरों वाली सिन्धी लिपि तैयार की, जो सिन्ध की प्रशासनिक भाषा निश्चित की गई। वर्तमान में भारत में सिन्धी भाषा, देवनागरी और अरबी-सिन्धी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी सिन्धी में सिन्धी की विशेष अंतःस्फुटित ध्वनियों (ग, ज, ड, ब) को नीचे रेखांकित कर लिखा जाता है। पाकिस्तान में अरबी-सिन्धी लिपि का प्रयोग किया जाता है। विदेशों में बसने वाले सिन्धी आजकल रोमन लिपि का प्रयोग भी करने लगे हैं। रोमन लिपि के मानकीकरण की कोशिशें भी की जा रही हैं।

1.2 सिन्धी भाषा की वर्तमान स्थिति

सन् १९४७ में भारत-विभाजन के बाद सिन्धी भाषा दायरा भारत और दुनिया के विभिन्न देशों तक फैला हुआ है। पाकिस्तान और भारत दोनों देशों में सिन्धी को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है हालांकि भारत में 'सिंध'राज्य न होने की वजह से भारत में इसका चलन राज्य भाषा के रूप में नहीं किया जाता फिर भी राज्य सरकारों और केंद्रीय सरकार की तरफ़ से अन्य भाषाओं की तरह सिन्धी भाषा के प्रचार-प्रसार और संरक्षण के लिए विभिन्न क़दम उठाए गये हैं।

पाकिस्तान में मुख्यतः सिन्ध, पंजाब और बलूचिस्तान में सिन्धी जाति बहुतायत में है; भारत में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों में सिन्धी बहुल मात्रा में हैं। विश्व के अन्य देशों जैसे ब्रिटेन, अमेरिका, खाड़ी देश, सिंगापुर, हाँगकाँग, इंडोनेशिया, स्पेन, जिब्राल्टर आदि में भी सिन्धी भाषी अच्छी खासी संख्या में बसे हुए हैं।

पाप्युलेशन एसोसिएशन ऑफ़ पाकिस्तान द्वारा २००९ की जनसंख्या गणना के अनुसार, इस वक्त सिन्ध पाकिस्तान में सिन्धी भाषा बोलने वाले लोगों की संख्या, ३,५४,७०,६४८ अर्थात् साढ़े तीन करोड़ से भी अधिक है जिसमें से लगभग ९२.३२ प्रतिशत मुस्लिम सिन्धी और ७.५ प्रतिशत हिन्दू सिन्धी हैं।

२००१ की जनसंख्या गणना के अनुसार भारत में यह संख्या २५,३५,४८५ है किन्तु जनगणना में दिखाई सिन्धी भाषियों की जनसंख्या भ्रामक है। एक अनुमान के अनुसार इस समय भारत में सिन्धी भाषियों की तादाद, पचास से साठ लाख अवश्य होगी। इसका कारण इस सामान्य धारणा पर आधारित है कि देश-विभाजन के समय बारह-तेरह लाख हिन्दू-सिन्धी, सिन्ध से भारत में आए थे। यदि भारत में औसत जन्मदर दो प्रतिशत भी मानी जाए तो पिछले साठ वर्षों में तेरह लाख की आबादी बढ़कर साठ लाख के आसपास हो जाएगी।

विश्व के अन्य देशों में सिन्धियों की संख्या लगभग पच्चीस-तीस लाख होगी। इस अंदाज़ से विश्व में सिन्धी बोलने वाले लोगों की संख्या लगभग साढ़े चार करोड़ होगी। जिस भाषा को बोलने वाले भारत में लगभग ५०-६० लाख, सिन्ध पाकिस्तान में लगभग ३.५ करोड़ और विश्व के अन्य देशों में लगभग २५-३० लाख अर्थात लगभग ४.५ करोड़ हों, क्या उस भाषा का भविष्य ख़तरे में हो सकता है!

2. भारत-विभाजन का सिन्धी भाषा और संस्कृति पर प्रभाव

भारत में सिन्धी भाषा की स्थिति को समझने के लिए सिन्धी समुदाय की स्थिति को भी जानना होगा। भारत की स्वतंत्रता के साथ भारत-विभाजन भी हुआ और सिन्धी समुदाय भी दो से अधिक हिस्सों में बंट गया, इसके साथ ही सिन्धी भाषा के भी टुकड़े हो गए। धर्म के आधार पर हुए इस विभाजन के कारण, लगभग 14 लाख हिन्दू सिन्धी, जो उस वक्त सिन्ध की जनसंख्या का 25 प्रतिशत थे, भारत में आकर बस गए और कुछ हज़ार सिन्धी विश्व के अन्य देशों में रहने लगे। भारत में विभिन्न शहरों में रेफ़्यूजी कैंप और कल्याण (उल्हासनगर) में मिलिट्री बैरक्स से सिन्धियों ने तकलीफ़ भरी ज़िंदगी की एक बार फिर शुरूआत की। लगभग 25-30 साल का यह संघर्ष सिन्धी बुज़ुर्गों से सुना जा सकता है, सिन्धी साहित्य में भी इसकी झलक दिखती है। सिन्धी समुदाय, मेहनती और स्वाभिमानी माना जाता है, जिसने भारत में स्वंय पर लगे 'शरणार्थी'का लेबिल हटाकर स्वंय को 'पुरूषार्थी'साबित किया। ज़िंदगी के इस संघर्ष के साथ ही, सिन्धी भाषा और संस्कृति को बचाने की हलचल भी प्रारंभ हो गई। गुजरात और महाराष्ट्र में बड़ी संख्या में सिन्धी माध्यम के स्कूल शुरू किए गए, रात्रिशालाएं आरंभ हुई। साहित्यिक संस्थाएं, नाटक ग्रुप बने; गीत, संगीत के कार्यक्रम, साहित्य गोष्ठियां, साहित्यिक गतिविधियां ज़ोरशोर से होने लगी। सिन्धी भाषा को संवैधानिक दर्जा दिलाने के लिए मुहिम शुरू हुई, धरने दिए गए और भूख हड़तालें भी हुई। आखिर 10 अप्रैल 1967 को, चेटीचंड अर्थात् सिन्धी नववर्ष के दिन सिन्धी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं सूचि में मान्यता प्राप्त हुई। मगर बात यहां समाप्त नहीं हुई। भाषा को मान्यता मिली तो लिपि का झगड़ा शुरू हुआ। साहित्यकारों और विद्वानों का एक समूह सिन्धी के लिए, प्रचलित अरबी-सिन्धी लिपि को उचित मानता था तो दूसरा समूह उसे इस्लामिक मानते हुए, देवनागरी लिपि का पक्षधर था। शायद 'भारतीयता'दिखाने का एक यह भी तरीक़ा था, हालांकि देवनागरी के पक्षधर भी साहित्य रचना तो अरबी-सिन्धी लिपि में ही करते थे। ख़ैर, भारत सरकार ने सिन्धी के लिए दोनों लिपियों को मान्यता दी। तब लगा कि अब इस भाषा को कोई ख़तरा नहीं है परंतु यह गणित ग़लत साबित हुआ क्योंकि विभाजन के अन्य असर, विभाजन के इतने वर्षों बाद प्रगट हो रहे हैं।

इतनी बड़ी संख्या में हुए स्थानान्तरण के बाद सिन्धी भारत में बस तो गए, पर किसी केंद्रित भौगोलिक विस्तार के न होने से, तितर-बितर भी हो गए। विभाजन के सबसे मारक प्रभाव हुए, वे हैं विशिष्ट अभिव्यक्ति के साधनों का ह्रास, ग्रामीण अंचल का अभाव, विच्छिन्नता, संपर्क का अभाव, विवाह संबंध में सुदृढ़ता की कमी, भाषाप्रयोग क्षेत्र का संकुचन, लिपि-विभाजन का विपरीत

प्रभाव इत्यादि। सिन्धी के संदर्भ में भौगोलिक विभाजन ने, जाति विभाजन, भाषा विभाजन, संस्कृति विभाजन को भी जन्म दिया है।

सिन्धी कवि नारायण श्याम ने लिखा,

सिन्ध को कोई नहीं बिसरा सकता सिन्धियों से,
सिन्ध सिन्धियों में बसे, सिन्ध यहां, सिन्ध वहां।
देश बनता है नहीं मिट्टी से, मगर लोगों से,
सिन्ध सिन्धियों में बसे, सिन्ध यहां, सिन्ध वहां।

आम सिन्धी ने भी यही किया। उन्होंने सोचा कि हम जहां है, वहां सिन्ध है। यहां 'सिन्ध'का अर्थ ज़मीन विशेष नहीं पर, सिन्धी संस्कृति, सिन्धियत है, परंतु 'राज्य-विहीन भाषा'होने का ख़ामियाज़ा सिन्धी को भुगतना पड़ा है। गुजरात के कच्छ ज़िले का आदिपुर-गांधीधाम शहर, कुछ हद तक 'सिन्ध' की कमी पूरी कर सकता था मगर उसके लिए धैर्य और अविरत संघर्ष की आवशकता थी जो आसान नहीं था। भाई प्रताप की सोच और दूरदृष्टि, महात्मा गांधी और वल्लभभाई पटेल की कोशिश से कच्छ के महाराजा प्रागमलजी ने गुजरात के कच्छ प्रदेश में सैंकड़ो एकड़ ज़मीन विस्थापित सिन्धियों को बसाने के लिए दी और प्रारंभ में सैंकड़ों सिन्धी आए भी और बबूल झाड़ियों से भरी ज़मीन को रहने लायक बनाया। इसे 'नई सिन्ध' और 'सिन्धियों का पांचवां धाम'भी कहा गया पर भाई प्रताप की इस दूरदृष्टि का लाभ जाति नहीं उठा पाई।

सिन्धी प्रजा की एक और खूबी है, घुलमिल जाने की। शायद सदियों से सिन्ध ने जो विदेशी शासन देखे, उसका ही यह प्रभाव है। भारत में भी जो जिस राज्य में रहा, वहां का हो गया है। सिन्धी, गुजरात में गुजराती, बंगाल में बंगाली, और महाराष्ट्र में मराठी हो गए हैं। अन्य से एकाकार होने में 'सूफ़ीमत' ने भी सिन्धियों की मदद की, जो किसी भी धर्म, विश्वास के प्रति कट्टरता नहीं रखता, प्रेम और स्नेह को सबसे ऊंचा दर्जा देता है। इष्टदेव वरूणदेवता झूलेलाल के साथ साथ सिन्धी घरों में गुरूनानक, कृष्ण, शिव, गणपति, दुर्गा, आदि देवी देवताओं की मूर्तियां देखी जा सकती हैं। अन्य के साथ एकाकार होने की इस स्वभाव से सिन्धी समाज को स्वंय को स्थापित करने में सहूलियत ज़रूर हुई परंतु इससे सिन्धी भाषा का स्थान अन्य भाषा और सिन्धी संस्कृति का स्थान अन्य संस्कृतियां लेने लगीं। रूपया, गहना खो जाने पर जितना दुख का अहसास होता है, शायद उतना अहसास भी एक समय, अपनी भाषा और संस्कृति को गंवाते हुए इस जाति को नहीं हुआ। किसी अपने के मरने का दुख व्यक्ति को सारा जीवन होता है परंतु अपनी भाषा के मृत्यु की ओर चुपचाप बढ़ने का पता भी नहीं चल पाया। शायद इसका स्वाभाविक कारण यह था कि इन 25-30 वर्षों में सिन्धी समुदाय भारत में अपने पैर जमा चुका था, जीवन सामान्य हो चला था, अन्य भारतीय भाषाओं की वजह से रोज़ी, रोटी मिल रही थी। पर कुछ ऐसा था जो सामान्य नहीं था, भाषा की दृष्टि से ऐसा धीमा परिवर्तन हो रहा था जो उस वक्त नज़र नहीं आया। लगा कि एक भाषा नहीं प्रयोग में ला रहे तो क्या हुआ, पर यह बाद में पता चला कि भाषा सिर्फ़ भाषा नहीं है, वह किसी जाति के सोच-विचार, उसके जीवन जीने का भी मार्ग है। 'अम्मा' को 'मॉम' और 'बाबा'को 'डैड'बोलने से सिर्फ़ शब्दों का स्थानापन्न नहीं होता, पूरे सोच का स्थानापन्न होता है। भौतिकवाद और वैश्वीकरण ने 'मातृभाषा'की जगह 'व्यापारभाषा'को दे दी; यह व्यापार भाषा कहीं हिन्दी, कहीं गुजराती, कहीं अंग्रेज़ी, कहीं तमिल तो कहीं मराठी है। अस्मिता के संकट के फलस्वरूप, सिन्धी समुदाय में धर्मपरिवर्तन, नाम परिवर्तन और भाषा परिवर्तन की प्रवृतियां भी दिखाई देती हैं।

यहां विशेषतः सिन्धी भाषाप्रयोग क्षेत्र पर प्रभाव की बात की जाए तो स्कूली षिक्षा में क्रमषः घटता प्रयोग, उच्च षिक्षा में माध्यम का अभाव, प्रतियोगी परीक्षाओं, सरकारी कामकाज और प्रषासनिक क्षेत्र, उच्च पदों की नियुक्ति, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र, व्यापार और बाज़ार क्षेत्र, मनोरंजन और खेलकूद, आदि क्षेत्रों में सिन्धी का प्रयोग न के बराबर बचा है। इस सबके फलस्वरूप सिन्धी घरों में

और परस्पर संबंधों में भी सिन्धी भाषा का क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है जिससे सिन्धी भाषा के समाप्त होने का या समाप्त होने की संभावना का भय उजागर हुआ है। इस घटते भाषा प्रयोग का प्रभाव साहित्य सृजन और पाठक वर्ग पर भी हुआ है। नौजवान पीढ़ी के लेखक उंगलियों पर गिनने जितने भी मुश्किल से दिखाई देते हैं। जो लिखते हैं, वही पाठक भी हैं; कई परिस्थितियों में तो वे स्वयं भी पाठक नहीं हैं। साहित्यकारों, शिक्षाविदों द्वारा इस शंका की समय-समय पर अभिव्यक्ति भी हुई है। नारायण श्याम ने लिखा -

काश! ऐसा न हो कि किताबों में पढ़ा जाए,
कि थी सिन्ध और सिन्ध वालों की बोली।

हरि दिलगीर ने लिखा -

भारत में सिन्धी कवि, महान कलाकार
लिखते खूब हैं पर पढ़ने वाला कोई नहीं।
स्वंय लिखते हैं, स्वयं पढ़ते हैं,
स्वंय ख़ुश होते हैं।
सिन्धी कवि लिखते हैं तो स्वयं के लिए,
उनका पाठक, उनके अलावा और कोई भी नहीं।....
फिर भला यह रचना मैंने किसके लिए लिखी है?

ऐसे ही दर्द की अभिव्यक्ति हरीश वासवाणी की कहानी 'घंटी'में भी देखी जा सकती है जिसमें घर का बुज़ुर्ग स्वंय को गूंगा और लाचार महसूस करता है। अहमदाबाद में रहने वाला उसका बेटा हरि चावला से 'हरीभाई चावड़ा' हो गया है; गुजराती बहू झंखना की गुजराती और अंग्रेज़ी उन्हें समझ नहीं आती; दोनों पोते सिन्धी भाषा नहीं समझते। घर आए मेहमान से उन्हें जब सिन्धी में बात करने का मौका मिलता है तो हड्डियों का पिंजरा हो चुके इस बूढ़े में जान आ जाती है; और जब यह मेहमान घर से निकलने लगता है तो वे अपने पलंग के पास लगी आपातकालीन 'घंटी'बजाते हैं। सभी आशंकित हैं कि शायद उनका अंत समय नज़दीक है पर उन्हें अपने सामने खड़ा देख चौंक जाते हैं। कांपती टांगों पर खड़ा बुजुर्ग कहता है, 'मैंने सोचा कि इनसे एक बार और बात कर लूं। हो सकता है कि मुझसे सिन्धी में बात करने वाला यह आ़खिरी व्यक्ति हो।'कहानी का शीर्षक 'घंटी'मानो ख़तरे की घंटी है जो सिन्धी भाषा के अस्तित्व के ख़तरे में होने की ओर इशारा करती है। लाल पुष्प जैसे साहित्यकारों ने तो निराश होकर सिन्धी भाषा की मृत्यु की भी घोषणा कर डाली। राष्ट्रीय अंग्रेज़ी समाचारपत्र 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया'में यह हेडलाइन छपी थी कि 'सिन्धी संस्कृति वेंटीलेटर पर है'।

साठ और सत्तर के दशक में 'सिन्धियत'के प्रचार और प्रसार का एक तूफ़ान था, जो उस पीढ़ी के थकते ही जैसे थम सा गया। इन सब नकारात्मक परिस्थितियों और अंदेशों के बावजूद, वर्तमान में एक नई लहर उठती दिख रही है। सिन्धी लेखकों, कलाकारों की संख्या में वृद्धि हुई है; हर साल लगभग 400-500 सिन्धी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं; अंग्रेज़ी, हिन्दी और अन्य भाषाओं में सिन्धी साहित्य उपलब्ध कराया जा रहा है; सिन्धी संस्थाओं का प्रमाण बढ़ा है; सिन्धी कार्यक्रमों की संख्या बढ़ी है; सिन्धी से संबंधित शोधकार्य को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह सब दिखाता है कि कोई भी मृत्यु नहीं चाहता, हर कोई जीना चाहता है, व्यक्ति हो या समाज। सिन्धी समाज में भी सिन्धी भाषा को जीवित रखने के प्रयत्न विभिन्न स्तरों पर किए जा रहे हैं।

3. निराशात्मक स्थिति में आशा की किरण

विश्व-भर में जातीय अस्मिता और पहचान के उत्थान (एथनिक रिवाइवल) की लहर का प्रभाव हर समुदाय पर दिखाई दे रहा है। विभिन्न देशों में अल्प-भाषा समुदाय के रूप में स्वयं को सुरक्षित रखने की भावना के उदय से अपनी जड़ों से पुनः जुड़ने की ललक भी महसूस की जा रही है। सिन्धी समुदाय में भी सांस्कृतिक जागृति देखी जा सकती है; इसीलिए इष्टदेव के रूप मे वरूणदेवता झूलेलाल की स्थापना, झूलेलाल मंदिरों की स्थापना, विशेष सिन्धी त्यौहारों चेटीचंड, थदड़ी, लाललोई आदि का मनाया जाना; सिन्धी धार्मिक समुदायों का बढ़ता चलन; और इन विभिन्न प्रवृतियों में सिन्धी युवा पीढ़ी का सम्मिलित होना इसका प्रमाण है।

संस्कृति यदि शरीर है तो भाषा उसका दिल है। संस्कृति और भाषा को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। ऐसे में सिन्धी भाषा को जीवित रखने के लिए, सिन्धी के भाषाशास्त्री और लेखक डॉ. सतीश रोहरा के द्वारा सुझाया गया मार्ग 'कल्चरल बाय पास सर्जरी'व्यवहारिक और समझदारी भरा प्रतीत होता है। वे 'भाषा से साहित्य और साहित्य से संस्कृति'के मार्ग के बजाय 'संस्कृति से साहित्य और साहित्य से भाषा'का मार्ग अपनाने की बात करते हैं। आम युवा की तरह, सिन्धी युवा भी अपने कला-कौशल की अभिव्यक्ति चाहता है। अन्य भाषा समुदायों के बीच उसे वह स्थान और स्वीकृति आसानी से प्राप्त नहीं होगी जो उसे अपने भाषा समुदाय में प्राप्त होगी। वह भले ही सिन्धी भाषा या लिपि सीखना कठिन मानता हो, पर सिन्धी संगीत, नाटक और नृत्य के द्वारा अपने शौक और अपनी कला का प्रदर्षन अवश्य चाहता है। आदिपुर, अहमदाबाद, दिल्ली, अजमेर, कलकत्ता जैसे शहरों में कई साहित्यिक-शैक्षिक-सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा यह प्रयोग किया जा रहा है और इसका परिणाम भी आशाजनक है। सांस्कृतिक प्रवृतियों से जुड़े सिन्धी बालक और युवा, एक बार मन रमने पर भाषा के प्रति भी उत्सुकता प्रदर्शित करते हैं और अपने भाषाई और सांस्कृतिक संस्कार से जुड़ना चाहते हैं। इस सन्दर्भ में कई सराहनीय प्रयत्न भी किए गए हैं। उदाहरण के तौर पर अहमदाबाद में सिन्धू समाज संस्था द्वारा निर्मित सिन्धु भवन, जो भारत में इस तरह का पहला भव्य सिन्धु भवन है जहां मैरिज ब्यूरो, महिला समाज के साथ साथ सिन्धी गीत-संगीत-नाटक शिक्षा भी दी जाती है। इसी तर्ज़ पर आदिपुर कच्छ, भोपाल तथा अन्य कुछ शहरों में सिन्धु भवन कार्यशील हैं। अहमदाबाद की विज़न सिन्धु अकादमी की कोशिशें प्रशंसनीय हैं, विशेषतः उनकी प्रस्तुति 'सिन्धु गौरवगान' जो सिन्धी युवावर्ग को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से परिचित करवाती है। कलकत्ता के थिएटर लवर्स ग्रुप ने हाल ही में टैगोर के गीतों पर सिन्धी में आधुनिक नृत्य प्रस्तुति दी और टैगोर की सुप्रसिद्ध कहानियों का सिन्धी नाटकीय मंचन किया। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधालाजी द्वारा फरवरी 2011 में 'मंघाराम मलकानी थिएटर क्लब' की स्थापना की गई जिसके अधिकतम सदस्य और कलाकार विद्यार्थी और युवा हैं और इन्होंने अब तक लगभग पचास एकांकियां प्रस्तुत की हैं। संस्था में सिन्धी चित्र दीर्घा के अलावा समृद्ध पुस्तकालय भी है। राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद द्वारा सिन्धी सीखने के कोर्स, टीचर्स ट्रेनिंग वर्कशॉप और सेमीनार आयोजित किए जाते हैं। सिन्धी अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा हर वर्ष बच्चों और युवाओं के लिए नाटक और संगीत वर्कशॉप और प्रस्तुतियां आयोजित की जाती हैं। प्रशासनिक परीक्षाओं में सिन्धी विषय को प्रोत्साहन देने के लिए सिंध वेलफेयर सोसाइटी (लखनऊ) द्वारा विद्यार्थियों के लिए कार्यशालाएं और प्रशिक्षण शिविर आयोजन की नई पहल भी प्रशंसनीय है। कुछ विद्वानों और भाषावैज्ञानिकों ने मिलकर सिन्धी के लिए रोमन लिपि के मानकीकरण का कार्य किया है ताकि सिन्धी भाषा के लिए रोमन लिपि का मार्ग भी लिया जा सके।

भारत में मुंबई विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, महाराव सयाजीराव विश्वविद्यालय, पुणे विश्वविद्यालय के अलावा अजमेर के सरकारी कॉलेज, उल्हासनगर के चांदीबाई कॉलेज, आदिपुर के तोलाणी आर्टस व साइंस कॉलेज में सिन्धी विषय पढ़ाया जाता है। ये सभी विभाग सिन्धी भाषा व साहित्य शिक्षण के साथ समय समय पर विद्यार्थियों के लिए सिन्धी भाषा से सम्बंधित विभिन्न प्रवृर्तियाँ भी करते हैं।

भारत में सिन्धी भाषा के संरक्षण व संवर्धन की दिशा में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधालाजी आदिपुर (कच्छ), अखिल भारत सिन्धी बोली ऐं साहित सभा, साहित्य अकादमी, विभिन्न राज्य अकादमियों; केंद्रीय भाषा संस्थान (मैसूर), राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा स्थापित राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद, दिल्ली सरकार की सिन्धी अकादमी, सिन्धी काउंसिल ऑफ़ इंडिया, सिन्धी फेडरेशन ऑफ़ साउथ इंडिया, विभिन्न शहरों में स्थापित सिन्धी पंचायतों आदि की गतिविधियां उल्लेखनीय हैं।

ये सब उदाहरण टंकित करने का उदेश्य यही बताना है कि सीधे सपाट सिन्धी भाषा के प्रचार और नारेबाज़ी के बजाय यदि बाल और युवा वर्ग को ध्यान में रखते हुए योजनाबद्व तरीके से कार्य किया जाए; सिन्धी युवा को यह अहसास कराया जाए कि सिन्धी होना और सिन्धी बोलना किसी भी तरह से कमतर होना नहीं है; तो युवापीढ़ी स्वयं को सिन्धी कहलाने में गर्व भी करेगी और अपनी विरासत को सहेजना अपना कर्तव्य भी समझेगी।

आशा का एक और पहलू सिन्ध प्रदेश भी है जहां सिन्धी भाषी बहुल प्रमाण में है और सिन्धी सांस्कृतिक पहलुओं - ग्राम्यांचल, भाषा प्रयोग के विभिन्न क्षेत्र, गीत, संगीत, हस्तकला, वेषभूषा आदि की उपस्थिति भी है और सिन्धी भाषा उच्च शिक्षा, व्यापार,साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में माध्यम के रूप में भी प्रयोग की जाती है। सिंध का संस्कृति विभाग, इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधालाजी (जामशोरो), सिन्धी लैंग्वेज अथारिटी, सिन्धी अदबी संगत, आर्ट काउंसिल, सारंगा सोसाइटी आदि सिन्धी भाषा संवर्धन में कार्यारत हैं। वर्त्तमान परिस्तिथि में सीमा के इस पार और उस पार के सिन्धी साहित्य का एक-दूसरे तक पहुंचना मुश्किल और महंगा भी है। राजनैतिक संबंधों के सुधरने की आशा की जाए तो लोगों का परस्पर संपर्क होने से सिन्धी भाषाप्रयोग के क्षेत्र का भी विस्तार भी होगा, साहित्य का आदानप्रदान होने से भारतीय सिन्धी साहित्य को विशाल पाठक वर्ग भी प्राप्त होगा। यहां एक अन्य तथ्य ध्यान देने योग्य है कि अलग सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक परिवेश के कारण, भारत की सिन्धी और सिन्ध की सिन्धी में बहुत अंतर आ गया है; विशेषतः शब्दावली का अंतर बढ़ता जा रहा है। भारत में हिन्दी-संस्कृत प्रभावित सिन्धी है और सिन्ध में उर्दू प्रभावित। यहां एक रोचक उदाहरण देना अनुचित न होगा। सिन्ध की लेखिका माहताब महबूब भारत आईं तो यहां के किसी लेखक ने उनका परिचय देते कहा कि 'सिन्धी कथासाहित्य में इन्हनि जो योगदान साराह जोगो आहे'(अर्थात, सिन्धी कथा साहित्य में इनका योगदान प्रशंसनीय है) तब माहताब ने पास बैठे अन्य लेखक से कहा कि मैं पानदान, ख़ानदान तो जानती हूं, यह 'योगदान'क्या बला है!

विश्व के विभिन्न देशों में बसा सिन्धी समाज भी ऐसे मौके ढूंढ लेता है जिससे समुदाय के लोग आपस में मिलजुल सकें। दुबई की सिन्धी संगत; सिंगापुर, हांगकांग, स्पेन, कनाडा, जकार्ता, अमरीका की सिन्धी संस्थाएं, वार्षिक सिन्धी सम्मेलनों द्वारा एक दूसरे से जुड़े रहने का प्रयत्न करती है। अलाइंस ऑफ़ सिन्धी एसोसिएशन द्वारा 'विश्व सिन्धी सम्मेलन'आयोजित किया जाता है जहां सिन्धी से संबंधित विभिन्न पहलुओं के साथ सामाजिक और व्यापारिक संबंध भी स्थापित होते हैं। अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधालाजी द्वारा सिन्धी से सम्बंधित ऐतिहासिक और नवीन प्रोजेक्ट किए जाते हैं।

यहां सिन्धी समुदाय के 'वर्च्युअल जगत'का उल्लेख भी आवश्यक है। सिन्धी जाति आरंभ से ही व्यापारिक जाति रही है और व्यापार के कारण दुनिया के कोने-कोने में फेली हुई है। इंटरनेट पर सिन्धी से संबंधित जानकारी का प्रमाण बढ़ रहा है और उसे 'सर्च'भी किया जा रहा है। यह 'खोज'मात्र जानकारी की नहीं है, बल्कि अपनी संस्कृति और अपने संस्कार से जुड़ने की कोशिश भी है। 'छा थियो, 'सिन्धी शान, 'बियोन्ड सिन्ध', 'ऑल अबाउट सिन्धी', वॉईस ऑफ़ सिन्ध, 'सिन्धी लैंग्वेज', 'सिन्धी इन्फ़ो', 'सिन्धुलाजी', 'सिन्धिअन'आदि पत्रिकाओं और वेबठिकानों पर सिन्धी से संबंधित जानकारी निरंतर दी जाती है। सिन्धी के संदर्भ में, भविष्य में इस 'करामाती जाल'के और अधिक लाभदायी होने की उम्मीद है।

यह माना जाता है कि जब संकट गहरा होता है तो संकट से उबरने की कोशिशें भी तेज़ और पैनी होती हैं। सिन्धी समुदाय एक बार ज़मीन के आधार पर शरणार्थी कहला चुका है, अब अगर वह अपनी भाषा छोड़, अन्य भाषा का सहारा लेता है तो 'भाषाई शरणार्थी'कहलाया जाएगा। हिन्दी, अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं को जानना और अपनाना आवश्यक है पर अपनी मातृभाषा की बलि देकर नहीं; क्योंकि ऐसा करना नासमझी और स्वार्थ होगा।

संदर्भ:

१. ग्रियर्सन जी. आर., लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इण्डिया, वोल्यूम ८, पार्ट १, इंडो-आर्यन फैमिली, प्रष्ट ९. १९१९
२. कयूमुद्दीन अहमद, इंडिया बाय अलबरूनी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, पुनःमुद्रण 2005, पृष्ठ 81
३. रिचर्ड बर्टन, सिन्ध एंड इट्स रेसिज़, 1975, पृष्ठ 152

****

डॉ. विम्मी सदारंगाणी
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
सिन्धी विभाग, तोलाणी आर्ट्स व साइंस कॉलेज
आदिपुर (कच्छ)

Copyright © 2012- 2016 KCG. All Rights Reserved. | Powered By : Knowledge Consortium of Gujarat